UP Board Important Questions Class 11 भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास Chapter 2 भारतीय अर्थव्यवस्था (1950-1990) Bhartiya Arthvyavastha Ka Vikas

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न:

प्रश्न 1.
पं. जवाहरलाल नेहरू भूतपूर्व सोवियत संघ की किस नीति के पक्षधर नहीं थे?
उत्तर:
पं. जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ की उस नीति के पक्षधर नहीं थे, जिसमें उत्पादन के सभी साधन सरकार के स्वामित्व के अन्तर्गत थे।

प्रश्न 2.
आर्थिक प्रणाली अथवा अर्थव्यवस्था के प्रकारों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
आर्थिक प्रणाली अथवा अर्थव्यवस्था के तीन प्रकार हैं।

1. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था
2. समाजवादी अर्थव्यवस्था
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था।

प्रश्न 3.
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का निर्धारण किस पर निर्भर करता है?
उत्तर:
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन बाजार की शक्तियों पर निर्भर करता है।

प्रश्न 4.
समाजवाद में उत्पादन एवं वितरण का निर्णय कौन करता है?
उत्तर:
समाजवाद में उत्पादन एवं वितरण का निर्णय सरकार करती है।

प्रश्न 5.
भारत में योजना आयोग का अध्यक्ष कौन होता था?
उत्तर:
भारत में योजना आयोग का अध्यक्ष प्रधानमन्त्री होता था।

प्रश्न 6.
भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के प्रमुख लक्ष्य क्या हैं?
उत्तर:
भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के प्रमुख लक्ष्य संवृद्धि, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता एवं समानता हैं।

प्रश्न 7.
संवृद्धि का क्या अर्थ है?
उत्तर:
संवृद्धि का अर्थ है देश में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना।

प्रश्न 8.
भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजना किसके विचारों पर आधारित थी?
उत्तर:
भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजना सांख्यिकीविद् प्रशान्तचन्द्र महालनोबिस के विचारों पर आधारित थी।

प्रश्न 9.
महालनोबिस ने किस संस्था की स्थापना की?
उत्तर:
महालनोबिस ने कोलकाता में भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आई. एस. आई.) की स्थापना की।

प्रश्न 10.
सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का तात्पर्य किसी अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य से है।

प्रश्न 11.
सहायिकी से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
उत्पादन कार्यों के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली मौद्रिक सहायता को सहायिकी कहा जाता है।

प्रश्न 12.
प्रशुल्क क्यों लगाए जाते हैं?
उत्तर:
प्रशुलक लगाने पर आयातित वस्तु महँगी हो जाती है, जो वस्तु के प्रयोग को हतोत्साहित करती है।

प्रश्न 13.
भारत सरकार द्वारा भू-सुधार हेतु किए गए किन्हीं दो प्रयासों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:

1. जींदारी एवं जागीरदारी प्रथा का अन्त करना।
2. भूमि की अधिकतम सीमा का निर्धारण।

प्रश्न 14.
मिश्रित अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं?
उत्तर:
वह अर्थव्यवस्था जिसमें आर्थिक क्रियाओं पर सरकार एवं निजी दोनों क्षेत्रों का स्वामित्व होता है?

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 15.
हरित क्रान्ति में उच्च उत्पादकता बीजों (HYV) का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव किन खाद्यान्न फसलों पर हुआ?
उत्तर:
उच्च उत्पादकता बीजों (HYV) का सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव गेहूँ एवं चावल की फसलों पर पड़ा।

प्रश्न 16.
हरित क्रान्ति के कोई दो सकारात्मक प्रभाव बताइए।
उत्तर:

1. देश का खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
2. फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि होना।

प्रश्न 17.
भारत में हरित क्रान्ति का कोई एक नकारात्मक पहलू बताइए।
उत्तर:
हरित क्रान्ति के फलस्वरूप खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के बावजूद कृषि पर निर्भर जनसंख्या में कोई कमी नहीं आई।

प्रश्न 18.
आयात प्रतिस्थापन नीति का क्या उद्देश्य है?
उत्तर:
इस नीति का उद्देश्य वस्तुओं की पूर्ति आयात के बदले घरेलू उत्पादन द्वारा करना है।

प्रश्न 19.
लघु उद्योगों का कोई एक महत्त्व बताइए।
उत्तर:
लघु उद्योग श्रम प्रधान होने के कारण अधिक रोजगार अवसरों का सृजन करते हैं।

प्रश्न 20.
कृषि आगत से क्या तात्पर्य है?
उत्तर:
कृषि आगत से तात्पर्य कृषि उत्पादन में प्रयुक्त किए जाने वाले संसाधनों से है जो कृषि उत्पादन में अपनी भूमिका निभाते हैं।

प्रश्न 21.
भारत में आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया कब प्रारम्भ हुई?
उत्तर:
भारत में आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया 1 अप्रैल, 1951 से प्रारम्भ हुई।

प्रश्न 22.
भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की सार्थकता के पक्ष में कोई दो तर्क दीजिए।
उत्तर:

1. समाजवादी समाज की स्थापना में सहायक,

2. निजी क्षेत्र के एकाधिकार व केन्द्रीयकरण पर नियन्त्रण।

प्रश्न 23.
आर्थिक नियोजन का क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार प्राथमिकताएँ निर्धारित कर संसाधनों का प्रयोग करना आर्थिक नियोजन है।

प्रश्न 24.
समाजवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण का निर्णय कौन करता है?
उत्तर:
समाजवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण का निर्णय सरकार करती है।

प्रश्न 25.
भारतीय योजना का निर्माता किसे माना जाता
उत्तर:
प्रो. प्रशान्तचन्द्र महालनोबिस को भारतीय योजना का निर्माता माना जाता है।

प्रश्न 26.
कृषि सहायिकी के विपक्ष में दो तर्क दीजिए।
उत्तर:

1. सरकारी कोष पर अनावश्यक बोझ पड़ता।
2. निर्धन किसानों को इसका लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

प्रश्न 27.
कर्वे समिति का सम्बन्ध किससे है?
उत्तर:
कर्वे समिति का सम्बन्ध ग्राम एवं लघु उद्योगों से हो?

प्रश्न 28.
आयात संरक्षण के दो प्रकार बताइए।
उत्तर:

1. प्रशुल्क
2. कोटा।

लघूत्तरात्मक प्रश्न:

प्रश्न 1.
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते।
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं पर निजी स्वामित्व होता है। इसे बाजार अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है क्योंकि इस अर्थव्यवस्था में क्या उत्पादन करना है तथा उसका वितरण कैसे करना है, इसका निर्धारण बाजार की शक्तियों द्वारा होता है।

प्रश्न 2.
मिश्रित अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
मिश्रित अर्थव्यवस्था, वह अर्थव्यवस्था होती है जिसमें आर्थिक क्रियाओं पर सरकार एवं निजी दोनों क्षेत्रों का स्वामित्व होता है अर्थात् सरकार तथा बाजार दोनों एक साथ तीन प्रश्नों के उत्तर देते हैं कि क्या उत्पादन किया जाए, किस प्रकार से उत्पादन हो तथा उत्पादन का वितरण किस प्रकार किया जाए।

प्रश्न 3.
लघु उद्योगों के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
लघु उद्योगों की स्थापना हेतु काफी कम पूँजी की आवश्यकता होती है अतः इन्हें कहीं भी स्थापित किया जा सकता है। ये ग्रामीण विकास का आधार होते हैं। इसके अतिरिक्त लघु उद्योगों में प्रायः श्रम-प्रधान तकनीक का प्रयोग किया जाता है अतः ये रोजगार के अधिक अवसर सृजित करते हैं।

प्रश्न 4.
भारत सरकार ने लघु उद्योगों के संरक्षण हेतु क्या प्रयास किए?
उत्तर:
भारत सरकार ने लघु उद्योगों को प्रतिस्पर्धा से बचाने हेतु अनेक उत्पादों को लघु उद्योगों हेतु आरक्षित कर दिया, जिन्हें बड़े उद्योग उत्पादित नहीं करते थे। इसके अतिरिक्त सरकार ने लघु उद्योगों को कई प्रकार की रियायतें प्रदान की। लघु उद्योगों से कम उत्पाद शुल्क वसूल किया गया तथा इनके लिए कम ब्याज दरों पर ऋण की व्यवस्था भी की गई।

प्रश्न 5.
देश के उद्योगों को आयातों की प्रतिस्पर्धा से संरक्षण हेतु सरकार द्वारा क्या उपाय अपनाए गए?
उत्तर:
सरकार द्वारा देश के उद्योगों को आयातों की प्रतिस्पर्धा से संरक्षण हेतु प्रशुल्क एवं कोटा की नीति अपनायी गई। प्रशुल्क के अन्तर्गत आयात वस्तुओं पर ऊँची दर से कर लगाया गया जिससे आयातित वस्तुएँ महंगी हो गई एवं आयात हतोत्साहित होते हैं। कोटा के अन्तर्गत आयातित वस्तु की आयात मात्रा निश्चित कर दी गई, उस वस्तु का उस निर्धारित सीमा से अधिक आयात नहीं किया जा सकता - है। इसके परिणामस्वरूप भी आयातों में कमी आई तथा देशी उद्योगों को प्रतिस्पर्धा से संरक्षण मिलता है।

प्रश्न 6.
भारत में आर्थिक नियोजन की आवश्यकता क्यों पड़ी?
उत्तर:
स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था अत्यन्त पिछड़ी हुई थी, इसमें बेरोजगारी तथा निर्धनता की प्रमुख समस्याएँ थीं। उस समय देश में आर्थिक विषमताएँ व्याप्त थीं तथा देश आधारित संरचना के आधार पर भी अत्यन्त

पिछड़ा हुआ था एवं आधुनिकीकरण का अभाव था। उस समय देश में कृषि एवं उद्योगों की स्थिति भी काफी पिछड़ी हुई थी। अतः देश में इन सभी समस्याओं के साथ-साथ समाधान हेतु आर्थिक नियोजन की आवश्यकता पड़ी।

प्रश्न 7.
औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 के अन्तर्गत उद्योगों को कितने भागों में वर्गीकृत किया गया?
उत्तर:
इस नीति के अन्तर्गत उद्योगों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया

1. प्रथम वर्ग में वे उद्योग शामिल थे जिन पर राज्य का स्वामित्व था।
2. द्वितीय वर्ग में वे उद्योग थे जिन पर सरकारी एवं निजी दोनों क्षेत्रों का स्वामित्व था।
3. तृतीय वर्ग में वे उद्योग सम्मिलित थे जिन पर निजी स्वामित्व था।

प्रश्न 8.
क्या कीमतें वस्तुओं की उपलब्धता की संकेतक हैं?
उत्तर:
हाँ, कीमतें वस्तुओं की उपलब्धता की संकेतक हैं। यदि वस्तु की उपलब्धता कम हो जाती है तो वस्तु की कीमतों में वृद्धि हो जाती है। इसी प्रकार यदि वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ जाती है तो वस्तुओं की कीमतों में कमी आ जाती है। उदाहरण के लिए पैट्रोल की कीमत में वृद्धि इसकी कमी को दर्शाता है।

प्रश्न 9.
समाजवादी अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते
उत्तर:
समाजवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था होती है जिसमें सभी आर्थिक क्रियाओं पर सरकार का स्वामित्व होता है। इस अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी निर्णय सरकार द्वारा लिए जाते हैं। सरकार समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन करती है। सरकार का उद्देश्य आर्थिक लाभ के साथ-साथ समाज कल्याण भी होता है।

प्रश्न 10.
भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के संवृद्धि के लक्ष्य से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
पंचवर्षीय योजनाओं के संवृद्धि के लक्ष्य के अन्तर्गत उत्पादन व उत्पादन क्षमता में वृद्धि का लक्ष्य रखा जिसके फलस्वरूप देश के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि हो सके। साथ ही देश के अन्दर परिवहन, बैंकिंग आदि सेवाओं का विस्तार हो सके। अतः संवृद्धि लक्ष्य का तात्पर्य है कि देश में वस्तुओं एवं सेवाओं का अधिक से अधिक उत्पादन किया जाए।

प्रश्न 11.
भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र पर टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
सेवा क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सेवाओं, यथा बैंकिंग, बीमा, संचार आदि को सम्मिलित किया जाता है। भारत में सेवा क्षेत्र का निरन्तर विस्तार हो रहा है। भारत में वर्ष 1950 - 51 में 17.2 प्रतिशत लोग सेवा क्षेत्र पर निर्भर थे जो वर्ष 1990 - 91 में बढ़कर 20.5 प्रतिशत हो गए। 1950 - 51 में देश के जी.डी.पी. में सेवा क्षेत्र का योगदान मात्र 28 प्रतिशत था वह वर्ष 1990 - 91 में बढ़कर 40.5 प्रतिशत हो गया।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 12.
हरित क्रान्ति से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
हरित क्रान्ति का अभिप्राय भारत में छठे दशक के मध्य कृषि उत्पादन में हुई भारी वृद्धि से लिया जाता है जो एक अल्प समय में उन्नत बीजों तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग द्वारा सम्भव हुआ है। देश में कृषि के क्षेत्र में इस तकनीक द्वारा एकाएक उत्पादन में वृद्धि सम्भव हुई जिसके कारण इसे क्रान्ति का नाम दिया गया।

प्रश्न 13.
हरित क्रान्ति के कोई चार सकारात्मक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:

1. भारत में हरित क्रान्ति के फलस्वरूप - फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई है।
2. हरित क्रान्ति के फलस्वरूप भारत खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया।
3. हरित क्रान्ति से देश में सिंचाई सुविधाओं में विस्तार हुआ।
4. हरित क्रान्ति से कृषकों की आय में वृद्धि हुई।

प्रश्न 14.
भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि एवं कृषि से र सम्बद्ध क्रियाओं को शामिल किया जाता है। भारत में वर्ष 1950 - 51 में देश की लगभग 70.1 प्रतिशत जनसंख्या - कृषि पर निर्भर थी जो घटकर 1990 - 91 में 66.8 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार वर्ष 1950 - 51 में सकल घरेलू उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 59 प्रतिशत था जो घटकर 1990 - 91 में 34.9 प्रतिशत हो गया।

प्रश्न 15.
काश्तकारी सुधारों का क्या तात्पर्य है?
उत्तर:
भारत में भूमि सुधारों के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों में काश्तकारी कानूनों में सुधार किया गया। इसे ही काश्तकारी सुधार कहा जाता है। इसके अन्तर्गत सबसे पहले लगान का न्यायोचित निर्धारण किया गया तथा उनकी वसूली को सरल बनाया गया। इसके अतिरिक्त काश्तकारों को भूमि के स्वामित्व के अधिकार प्रदान किये गए ताकि उन्हें आसानी से भूमि से बेदखल नहीं किया जा सके। काश्तकारों को भू-स्वामियों द्वारा बेदखली से सुरक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न राज्यों में पुनर्ग्रहण अधिकार यथासम्भव सीमित करने के प्रयास किए गए।

प्रश्न 16.
भारत में कृषि क्षेत्रक में सुधार हेतु किए गए किन्हीं दो प्रयासों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:

1. जमींदारी एवं जागीरदारी प्रथा का अन्त-भारत में स्वतंत्रता के समय जमींदारी एवं जागीरदारी प्रथा प्रचलन में थी जिसमें कृषकों का अत्यधिक शोषण होता था। भारत में कृषि क्षेत्रक में सुधार लाने हेतु भूमि सुधार के अन्तर्गत जमींदारी एवं जागीरदारी प्रथा का अन्त किया गया।
2. बिचौलियों का उन्मूलन-स्वतंत्रता के समय भारत में बिचौलियों के द्वारा कृषकों की अधिकांश उपज को हड़प लिया जाता था। अतः देश में भूमि सुधार कार्यक्रमों के अन्तर्गत बिचौलियों का उन्मूलन किया गया।

प्रश्न 17.
भारत में हरित क्रान्ति को लागू करने के पीछे क्या कारण था?
उत्तर:
स्वतंत्रता के समय देश की लगभग 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर थी किन्तु कृषि की स्थिति अत्यन्त पिछड़ी हुई थी। कृषि में उत्पादन एवं उत्पादकता काफी नीची थी तथा कृषि में पुरानी तकनीकों का प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर थी क्योंकि सिंचाई सुविधाओं का नितान्त अभाव था। इस कारण देश में कृषि क्षेत्र के विकास, उत्पादन में वृद्धि करने, उत्पादकता में वृद्धि करने, उर्वरकों का प्रयोग बढ़ाने, सिंचाई सुविधाओं में विस्तार करने तथा उच्च उत्पादकता वाले बीजों का प्रयोग बढ़ाने हेतु हरित क्रान्ति को लागू किया गया।

प्रश्न 18.
भारत में हरित क्रान्ति से प्राप्त होने वाले कोई दो लाभ बताइए।
उत्तर:
(1) फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि:हरित क्रान्ति के अन्तर्गत उच्च उत्पादकता वाले बीजों का उपयोग किया गया, सिंचाई सुविधाओं में विस्तार के प्रयास किए गए, उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि की गई तथा कीटनाशकों के उपयोग में भी वृद्धि की गई। इन सबके फलस्वरूप देश में फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई जिससे कृषकों की आय में वृद्धि हुई।

(2) खाद्यानों में आत्मनिर्भरता: हरित क्रान्ति में उन्नत एवं अधिक उपज देने वाले बीजों, उर्वरकों तथा अन्य कृषि आदानों का प्रयोग किया गया। इससे कम समय में तैयार होने वाली फसलों का विस्तार हुआ तथा देश खाद्यान्नों की दृष्टि से आत्म-निर्भर हो गया।

प्रश्न 19.
भारत में हरित क्रान्ति की विभिन्न सफलताओं को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
भारत में हरित क्रान्ति की प्रमुख सफलताएँ निम्न प्रकार हैं।

1. हरित क्रान्ति के फलस्वरूप विभिन्न फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई।
2. हरित क्रान्ति से खाद्यान्नों के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई जिसके फलस्वरूप देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया।
3. हरित क्रान्ति से किसानों के विपणित अधिशेष में वृद्धि हुई।
4. हरित क्रान्ति से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ा जिससे खाद्यान्नों की कीमतों में कमी आई।
5. हरित क्रान्ति से देश में खाद्यान्नों के सुरक्षित स्टॉक में वृद्धि हुई।
6. सरकार द्वारा अनेक अनुसंधान संस्थानों की स्थापना की गई।
7. हरित क्रान्ति से अधिक उपज देने वाली फसलों का क्षेत्र विस्तार हुआ।
8. हरित क्रान्ति से वैज्ञानिक कृषि को बढ़ावा मिला।

प्रश्न 20.
प्राथमिक क्षेत्रक तथा द्वितीयक क्षेत्रक में अन्तर बताइए।
उत्तर:
किसी भी अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक में कृषि एवं कृषि सम्बद्ध क्रियाओं को शामिल किया जाता है। कृषि

https://www.evidyarthi.in/

सम्बद्ध क्रियाओं में पशुपालन, वानिकी, मत्स्य पालन आदि को शामिल किया जाता है; जबकि द्वितीयक क्षेत्र में उन क्रियाओं को शामिल किया जाता है जिनके द्वारा किसी एक प्रकार की वस्तु को अन्य प्रकार की वस्तु में बदला जाता है। द्वितीयक क्षेत्र में मुख्य रूप से विनिर्माण एवं उद्योगों को शामिल किया जाता है।

प्रश्न 21.
भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के कोई दो लक्ष्य बताइए।
उत्तर:
(1) संवृद्धि: संवृद्धि के लक्ष्य के अन्तर्गत देश में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने का लक्ष्य रखा गया। इसमें देश में उत्पादन क्षमता में| वृद्धि कर राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना मुख्य लक्ष्य था।

(2) आधुनिकीकरण: आधुनिकीकरण के अन्तर्गत देश में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु नई तकनीकों के उपयोग में वृद्धि करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया, साथ ही देश में सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का लक्ष्य भी रखा गया।

प्रश्न 22.
हरित क्रान्ति की कोई दो विफलताएँ बताइए।
उत्तर:
(1) आर्थिक एवं सामाजिक विषमता: भारत में हरित क्रान्ति का लाभ मुख्य रूप से बड़े एवं सम्पन्न किसानों को ही मिला, छोटे किसानों को हरित क्रान्ति का अधिक लाभ नहीं मिल पाया। अतः हरित क्रान्ति के फलस्वरूप देश में आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं में वृद्धि हुई है।

(2) क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि: हरित क्रान्ति का लाभ मुख्य रूप से कुछ सम्पन्न राज्यों को ही प्राप्त हुआ क्योंकि वहाँ की सरकार एवं कृषक सम्पन्न थे जबकि कुछ राज्यों को कोई लाभ प्राप्त नहीं हुए। अत: हरित क्रान्ति से क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि हुई।

प्रश्न 23.
पूँजीवादी तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था में अन्तर बताइए।
उत्तर:
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था होती है जिसमें सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं पर निजी क्षेत्र का स्वामित्व होता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण, बाजार शक्तियों द्वारा तय होता है जबकि इसके विपरीत समाजवादी अर्थव्यवस्था में सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं पर सरकार का स्वामित्व होता है तथा वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण के सम्बन्ध में निर्णय लोगों की आवश्यकताओं के आधार पर सरकार द्वारा लिया जाता है।

प्रश्न 24.
पूँजीवादी तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था में तुलना कीजिए।
उत्तर:
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था होती है जिसमें सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं पर निजी क्षेत्र का स्वामित्व होता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण, बाजार शक्तियों द्वारा तय होता है। जबकि

मिश्रित अर्थव्यवस्था, पूँजीवादी अर्थव्यवस्था एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था का मिश्रण है। इसमें देश की विभिन्न आर्थिक क्रियाओं पर सरकार एवं निजी दोनों क्षेत्रों का स्वामित्व होता है। उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी निर्णय सरकार एवं बाजार दोनों द्वारा लिए जाते हैं।

प्रश्न 25.
"कृषि सहायिकी का कोई औचित्य नहीं है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए।
अथवा
भारत में कृषि सहायिकी के विपक्ष में तर्क दीजिए।
उत्तर:
कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि कृषि सहायिकी का लाभ केवल सम्पन्न किसानों को ही मिला अतः कृषि सहायिकी का कोई औचित्य नहीं रहा। इसके अतिरिक्त निर्धन कृषकों को कृषि सहायिकी का अधिक लाभ प्राप्त नहीं हुआ है। सहायिकी के कारण केवल सरकारी कोष पर ही अनावश्यक बोझ पड़ा है अत: कृषि सहायिकी को समाप्त कर देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वर्ष 1960 के दशक के अन्त तक देश में कृषि उत्पादकता की वृद्धि से भारत खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया था अतः सहायिकी का कोई औचित्य नहीं रहा है।

प्रश्न 26.
स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में कृषि सहायिकी देने की क्या आवश्यकता थी?
उत्तर:
स्वतंत्रता के समय भारतीय कृषि अत्यन्त पिछड़ी हुई थी तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति भी अत्यन्त दयनीय थी अतः कषि क्षेत्र में सहायिकी देना अत्यन्त आवश्यक था। भारत में हरित क्रान्ति के अन्तर्गत छोटे किसानों को नई HYV प्रौद्योगिकी को अपनाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कृषि सहायिकी आवश्यक थी। उर्वरकों का उपयोग करने हेतु कृषकों को उर्वरक सहायिकी देना आवश्यक था अन्यथा वे ऊँची कीमत पर उर्वरक खरीद कर उपयोग करने में समर्थ नहीं थे। इसके अतिरिक्त सहायिक़ी समाप्त करने से गरीब एवं अमीर के बीच आर्थिक असमानताओं में और अधिक वृद्धि हो जाती। अतः स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में कृषि सहायिकी देना आवश्यक था।

प्रश्न 27.
भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि क्षेत्रक में भूमि सुधार कार्यक्रमों की क्या आवश्यकता थी?
उत्तर:
स्वतन्त्रता के समय देश में अधिकांश भूमि पर जमींदारों एवं जागीरदारों का आधिपत्य था तथा वे कृषकों का शोषण करते थे अत: भूमि सुधार आवश्यक था। इसके अतिरिक्त कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु कृषकों को भू-स्वामित्व सौंपना आवश्यक था जिसके लिए भूमि सुधार कार्यक्रमों की आवश्यकता पड़ी। स्वतन्त्रता के समय कृषि में बिचौलियों द्वारा कृषकों का शोषण किया जाता था अत: उन बिचौलियों के उन्मूलन के लिए भूमि सुधारों की आवश्यकता हुई। स्वतंत्रता के समय भूमि के असमान वितरण के कारण आर्थिक असमानता व्याप्त थी अत: आर्थिक समानता के उद्देश्य की पूर्ति हेतु भूमि सुधार आवश्यक थे। इस प्रकार स्वतंत्रता के समय कृषि की स्थिति काफी पिछड़ी हुई थी तथा उस स्थिति में सुधार हेतु भूमि सुधार कार्यक्रम आवश्यक थे।

https://www.evidyarthi.in/